



॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—<http://www.facebook.com/groups/aryayouth/>

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444



वर्ष-43 अंक-10 कार्तिक-2083 दयानन्दाब्द 202 16 अक्टूबर से 31 अक्टूबर 2026 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.10.2026, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoo.com Website : www.aryayuvakparishad.com

आर्य समाज सेक्टर 7 चंडीगढ़ का भजन प्रभात कार्यक्रम सम्पन्न

घर वापसी का मार्ग स्वामी श्रद्धानन्द ने प्रशस्त किया —राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य



चंडीगढ़, रविवार, 4 अक्टूबर 2026, आर्य समाज सेक्टर 7 चंडीगढ़ का भजन प्रभात कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ समाजसेवी संस्था के पूर्व कोषाध्यक्ष स्व. श्री आनंदशील आर्य जी की स्मृति में, उनके परिवार की तरफ से, उनकी चतुर्थ बर्सी के अवसर पर, प्रातः यज्ञ के साथ प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम में दिल्ली से पधारे केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने सर्व प्रथम श्रीआनंदशील के प्रति श्रद्धां सुमन व्यक्त किए और उन्होंने ने कहा कि जो हिन्दू भाई बहन किसी कारण से ईसाई या मुसलमान बन गए थे उन्हें वापिस लाने का मार्ग स्वामी श्रद्धानन्द ने ही प्रशस्त किया उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित किया और हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की उनका बलिदान शताब्दी वर्ष आ रहा जिसके अंतर्गत पूरा वर्ष कार्यक्रम चलेंगे उन्होंने कहा कि धर्म बदलने से राष्ट्र के प्रति निष्ठा ही बदल जाती है। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री प्रकाश चंद शर्मा ने किया तथा स्व. श्रीआनंदशील जी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सूरज जी द्वारा संस्था एवं समाज हित में सदैव प्रसंसनीय कार्य किए गए, एतदर्थ हम शर्मा परिवार के प्रति कृतज्ञ हैं। डा. विजय पाल शास्त्री व पिकी आर्या ने सुमधुर भजन गाकर, स्व. श्री आनंद शील शर्मा जी के प्रति अपने श्रद्धा भाव व्यक्त किए।

इसके साथ ही आर्य समाज सेक्टर 22 में पाखंड खंडन सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती व अन्य हिन्दू देवी- देवताओं के विरुद्ध संत रामपाल दास द्वारा अनर्गल प्रलाप करने के विरुद्ध निंदा की गई और सरकार से अपील की गई कि संतराम दास की जमानत रद्द करके अविलंब गिरफ्तार किया जाए जिससे समाज का वातावरण खराब न हो। युवा सन्यासी स्वामी आदित्य वेश, शिक्षाविद रमेशचंद्र जीवन, अशोक आर्य पंचकुला विनोद शर्मा, राजेंद्र आर्य, आनंद सिंह आर्य करनाल, धर्मवीर बत्रा, अमितेश कुमार आदि ने अपने विचार व्यक्त किए।



सादर निमंत्रण

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वाधान में

सादर निमंत्रण

143वें बलिदान दिवस पर

“एक शाम ऋषि दयानन्द के नाम”

सोमवार 9 नवम्बर 2026, शाम 4.00 बजे से रात्री 8.00 बजे तक
स्थान— आर्य समाज राजौरी गार्डन दिल्ली, ऋषि लंगर रात्री 8.00 बजे
देव दयानन्द को श्रद्धांजलि अर्पित करने आप सादर आमंत्रित हैं।

गायक कलाकार- नरेंद्र आर्य 'सुमन' - सुदेश आर्य - पिकी आर्य, अध्यक्षता- श्री सुभाष आर्य, पूर्व महापौर दिल्ली

अनिल आर्य, संयोजक, मो. 9810117464 महेन्द्र भाई, महामन्त्री ओम प्रकाश अरोड़ा, प्रधान अनिल कंवर, मन्त्री समाज

वज्र से कठोर तथा फूलों से कोमल थे स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज

— कन्हैया लाल आर्य, उपप्रधान आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

संस्कृत साहित्य के एक उज्ज्वल रत्न थे आचार्य भवभूति जी। इन्होंने एक उत्तम पुस्तक की रचना की है जिसका नाम है शूततराम चरितम्। इस पुस्तक में भवभूति जी ने भगवान राम का उस समय का वर्णन किया है जब उनकी धर्मपत्नी सीता जी का अपहरण हो जाता है, उस समय भगवान् राम वहां पर वन के वृक्षों, वहां विद्यमान पक्षियों, पशुओं, वनस्पतियों, पर्वतों, नदी-नालों से भावविहल होकर सीता का पता पूछते हैं। उस समय सीता की एक सखी वासन्ती राम के इस कोमल रूप को देखकर आश्चर्य प्रकट करते हुए कहती हैं—**वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादाये। लोकोत्तराणां चेतांसी को हि विज्ञातुमर्हति।।**

उत्तम पुरुषों का चरित्र वज्र से भी कठोर और फूलों से भी कोमल होता है, उसे जानने में कौन समर्थ हो सकता है? अर्थात् वासन्ती ने जिस राम के वज्र स्वरूप को देख रखा हो वह उसके कुसुम रूप को देखकर आश्चर्य व्यक्त करती है इसी प्रकार हम जब अपने चरित नायक स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज के जीवन को देखते हैं तो हमें अनायास यह उक्ति उनके जीवन से सम्बन्धित लगती है। यदि उनके जीवन का निकटता से मूल्यांकन किया जाये तो वह यह है— **नारिकेल समाकारा दृश्यन्ते हि सुहज्जनाः**, जिस प्रकार नारियल ऊपर से कठोर होता है, परन्तु उसके अन्दर अमृत तुल्य जल एवं कच्ची गिरी होती है। इसी प्रकार स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज का जीवन नारियल की सही व्याख्या है।

स्वामी रामेश्वरानन्द जी निःसन्देह कर्मयोगी थे। उन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलनों, हैदराबाद सत्याग्रह और विशेषतः पंजाब के हिन्दी सत्याग्रह में अपने साहस और कार्य कुशलता का जो परिचय दिया, वह हम सब जानते हैं। जबकि पंजाब में फूट की भयंकर अग्नि अकाली भाईयों की भूल से भड़कने वाली थी तो स्वामी जी ने अपनी त्यागपूर्वक बलिदानी भावनाओं से प्रेरित होकर जो मार्ग प्रशस्त किया है उससे हमें निःसन्देह गौरव प्राप्त हुआ है।

जन्म, बचपन एवं संन्यास की दीक्षा—उत्तर प्रदेश का बुलन्दशहर जनपद एक ऐसा सौभाग्यशाली स्थान है जिसने आर्य समाज की कई महान विभूतियों को जन्म देने का श्रेय प्राप्त है उनमें से एक थे स्वनामधन्य पूज्य स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज! आपका जन्म बुलन्दशहर के छोटे से ग्राम कुरैव में जाखड़ गोत्र में रामरूप नाम से हुआ। आपका बचपन अत्यन्त दुःखद वातावरण में व्यतीत हुआ। छः मास की अवस्था में माता और दस-बारह वर्ष की आयु में पिता का देहान्त हो गया। माता-पिता के अभाव में आपके मन में वैराग्य के बीज उत्पन्न हो गये और भगवद् भजन में मग्न रहने के साथ साधु-महात्माओं का संग करने लगे। १४-१५ वर्ष की आयु में घर छोड़कर संन्यास लेने का निर्णय कर लिया। साधु सन्तों की संगति में आध्यात्मिक तृप्ति नहीं हुई तो आप संस्कृत की नगरी काशी में पहुंच गये और वहां गुजराती संन्यासी स्वामी कृष्णानन्द जी से संन्यास की दीक्षा लेकर स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती बन गये।

गुरु से मिलन—आप अपनी आत्मा की तृप्ति के लिए वहां काशी में न टिक, अपितु काशी से प्रयाग, मथुरा, वृन्दावन होते हुए दिल्ली पहुंच गए। वहां यमुना नदी के किनारे एक सुरीली आवाज ने आपको आकर्षित किया। वहां जाकर देखा कि एक महात्मा अपने भजनोपदेश द्वारा तर्क पूर्ण बातें कर रहे हैं। वहां पर खड़े एक सज्जन ने इस महात्मा के बारे में बड़ी कड़वी बात कही, ष्म तो पहले ही कहें थे आर्य समाजी कुत्ता हो कुत्ता, जिनके पीछे पड़ जाये छोड़ नाय। यह वाक्य सुनकर स्वामी जी चौंके और उस महाशय से पूछा, कौन है आर्य समाजी? वे सज्जन बोले, तोय न पतो ये जो भौंक रहयो हैं, ये आर्य समाजी तो हैं। यह सुनकर स्वामी रामेश्वरानन्द जी सिर से पैर तक कांप गये, क्योंकि उन्होंने सुन रखा था, जो आर्य समाजी की बात सुन लेता है, वह नरक में जाता है। अब बात सुनना तो दूर, आर्य समाजी के दर्शन भी हो गये, अब मेरा क्या होगा कुछ देर कि कर्तव्यविमूढ़ से खड़े रहे, आंखों के आगे अन्धेरा छा गया। फिर मन में आय कि नरक में तो जाना ही जाना है, कम से कम इस बाबा की बात तो सुन लें। यह विचारकर महात्मा जी के व्याख्यान को अन्त तक सुना और सभा की समाप्ति पर उनसे प्रार्थना की कि वह मुझे अपना शिष्य बन लें। यह महात्मा कोई और नहीं थे ये थे स्वामी भीष्म जी महाराज। इस प्रकार उनकी यह यात्रा अपने गुरु के मिलन के साथ पूर्ण हो गई। ये वह स्वामी भीष्म जी थे जिन्होंने अपने जीवन के १२३ वर्ष के दीर्घ जीवन में आर्यसमाज के अनेक रत्न, महोपदेशक, विद्वान् एवं भजनोपदेशक दिए हैं जिनमें मुख्य स्वामी रामेश्वरानन्द जी, स्वामी ओमानन्द जी जैसे संन्यासी हैं।

गुरुकुल की स्थापना तथा सेवा कार्य—स्वामी भीष्म जी का ऐसा प्रभाव पड़ा कि जो व्यक्ति केवल रामायण और हनुमान चालीसा का पाठ करने में ही मोक्ष मानता था अब वह न केवल भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का एक सेनानी बना, अपितु हैदराबाद सत्याग्रह और हिन्दी सत्याग्रह आन्दोलन का अगुआ नेता भी बना। नमक सत्याग्रह में जेल गये। उस समय उनका एक ही नारा था— **नमक कानून तोड़ दिया, अंग्रेजों का सिर फोड़ दिया** पुलिस ने जाल बिछाकर उन्हें उस जेल में बन्दी बनाया जिसमें पं० जवाहर लाल नेहरू बन्दी थे। स्वामी जी राष्ट्रीय आन्दोलन में तो कूद ही चुके थे, इसके साथ ही वे महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्दिष्ट गुरुकुल प्रणाली को भी मूर्तरूप देना चाहते थे। अपने गुरु स्वामी भीष्म जी की प्रेरणा एवं अपने प्रिय शिष्य आचार्य धर्मवीर के सहयोग से १७ अप्रैल १९३६ को विधिवत करनाल के निकट घरोण्डा में एक गुरुकुल की स्थापना की। १५ अगस्त १९४७ को तो देश स्वतन्त्र हो गया। धार्मिक उन्माद के कारण देश को कई यातनाओं का सामना करना पड़ा। स्वामी जी ने पश्चिमी पंजाब (अब पाकिस्तान) से आए शरणार्थियों की जहां अन्न, वस्त्र से खूब सहायता की वहां अपने निकटवर्ती सारे क्षेत्र को मुसलमानों से मुक्त करा लिया।

कार्यक्षेत्र—१९३६ में जब हैदराबाद के धर्मान्ध नवाब द्वारा हिन्दुओं के साथ अन्याय किया तो आप सैकड़ों मील दूर होते हुए भी ७२ आर्यवीरों का एक जत्था लेकर नवाब की संगीनों एवं गोलियों का प्रहार सहन करने के लिए हैदराबाद पहुंच गये। हैदराबाद जेल में

आप ने बहुत सारी यातनाएं सही परन्तु ऋषि दयानन्द का दीवाना बिल्कुल घबराया नहीं। नवाब के अन्याय के विरुद्ध सदैव अपने जीवन को आहुत करने में तत्पर रहा। देश के स्वतन्त्र होने के पश्चात् १९५७ में प्रताप सिंह कैरो ने अपना दमन चक्र हिन्दुओं पर चलाया तभी निर्णय लिया गया कि आर्य समाज हिन्दी और हिन्दुओं की रक्षा के लिए एक आन्दोलन चलाया जाये। उन दिनों स्वामी जी आर्य समाज गुड़गांव छावनी में वेदोपदेश कर रहे थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान पूज्य स्वामी आत्मानन्द जी महाराज एवं सभा मन्त्री पं० जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती जी के अलग-अलग दो पत्र स्वामी को मिले उसमें लिखा था—

हमने आपको हिन्दी सत्याग्रह का द्वितीय सर्वाधिकारी नियुक्त किया है, हम आशा करते हैं कि आप हमारी इस प्रार्थना को अवश्य स्वीकार करेंगे।

स्वामी जी ने एक अनुशासित सिपाही की तरह यह रण निमन्त्रण सहर्ष स्वीकार किया। स्वामी जी के इस आन्दोलन में कूदते ही पड़ोसी राज्यों में जोश का समुद्र उमड़ पड़ा। स्वामी जी को कई प्रकार से प्रताड़ित किया गया परन्तु यह नरपुगांव शुरूका झुकना क्या जानेश की उक्ति को चरितार्थ कर रहा था। स्वामी जी कई मास तक जेलों में रहे। इसी बीच स्वामी आत्मानन्द जी रुग्ण हो गए। हिन्दी आन्दोलन को प्रचण्ड रूप देने के लिए श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त की अध्यक्षता में नई दिल्ली में सर्वसम्मति से स्वामी जी को शहिन्दी रक्षा समिति पंजाब का प्रधान चुना गया। इसी बीच मास्टर तारा सिंह ने पंजाबी सूबे की मांग को लेकर आमरण अनशन की घोषणा कर दी। सभी हिन्दी प्रेमी स्तब्ध रह गये। मास्टर तारा सिंह की धमकी का उत्तर देने के लिए पूज्य स्वामी जी महाराज ने अपना आमरण अनशन प्रारम्भ कर दिया। पूज्य स्वामी जी महाराज ने अपना आमरण अनशन तब तक चालू रखा जब तक भारत सरकार की ओर से उन्हें इस विषय में आश्वासन नहीं कर दिया कि पंजाबी सूबा नहीं बनेगा। इस विषय में तत्कालीन प्रधानमन्त्री पं० जवाहर लाल नेहरू जी ने स्वामी जी को सम्बोधित करते हुए लिखा था—

प्रिय स्वामी जी, आपने मेरा लोकसभा का बयान देखा और आज जो मैंने लोकसभा में कहा उसको भी आप कल समाचार पत्रों में देखेंगे? इससे हमारी नीति साफ मालूम हो जायेगी। मैं तो समझता हूँ कि आपको अपना अनशन छोड़ देना चाहिए और मैं आशा करता हूँ कि यह आप करेंगे।

आपका जवाहर लाल नेहरू २६/०८/१९६१ नेहरू जी द्वारा आश्वासन किये जाने के उपरान्त स्वामी जी ने १६ अगस्त १९६१ से किया हुआ अपना आमरण अनशन ३१ अगस्त १९६१ को स्थगित कर दिया। उसी का परिणाम है कि आज भी वह पंजाबी सूबे के सपना उन दुष्टों का द्वारा सफल नहीं हो सका। इनकी उस सफलता पर लाला राम गोपाल शाल वाले जी ने कहा था, **मास्टर तारा सिंह जी के पंजाबी सूबे के स्वप्न को भस्मसात करने में जो शानदार काम महाराज श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज ने किया है, उसे भारत देश के निवासी तथा समूची आर्य जनता कभी नहीं भुलायेगी।**

संसद यात्रा—इसी बीच लोकसभा के चुनाव घोषित हो गए। क्षेत्र के लोग एवं दूसरे—जिलों तथा प्रान्तों के लोग स्वामी जी को लोकसभा में पहुंचाने के लिए कटिबद्ध हो गए। तब उन्हें अपने गुरु स्वामी भीष्म जी महाराज का आदेश मिला तो वे करनाल संसदीय क्षेत्र से चुनाव जीता और लोक सभा में संस्कृत भाषा में शपथ ग्रहण की। उनके सांसद बनने पर कुछ विरोधियों ने कहा, यह साधु संसद में जाकर क्या करेगा? परन्तु प्रथम अधिवेशन में ही स्वामी जी के प्रश्नों एवं भाषणों में तहलका मचा दिया। श्री स्वामी जी वेतन और भते के नाम पर जो कुछ संसद से मिलता था, वह सब अपने क्षेत्र के निर्धन व्यक्तियों की सहायताार्थ दे दिया करते थे। उन्होंने सांसद को प्लेट व कोठी के रूप में मिलने वाली किसी भी सुविधा को स्वीकार नहीं किया। प्रतिदिन घरोण्डा से प्रातः काल ६ बजे चलने वाली रेलगाड़ी से दिल्ली आते थे। दिल्ली रेलवे स्टेशन से संसद भवन तक प्रायः पैदल ही आते थे और सायंकाल ६ बजे चलने वाली रेलगाड़ी से वापिस गुरुकुल घरोण्डा लौट आते थे। कभी कार्यवशात् रात्रि में दिल्ली ठहरना पड़ता तो आर्य समाज सीताराम बाजार (अजमेरी गेट के पास) दिल्ली के अधिकारियों ने उनके ठहरने के लिए एक कमरा दे रखा था। जब स्वामी जी ने संस्कृत में शपथ ली तो उनसे प्रभावित होकर ३३ अन्य सांसदों ने भी संस्कृत में शपथ ग्रहण की। यह एक अपूर्व दृश्य था। स्वामी जी से पूर्व लोकसभा का समस्त साहित्य अंग्रेजी में छपता था। हस्ताक्षर पंजिका में सदस्यगण अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते थे। स्वामी जी से प्रभावित होकर अन्य कई सांसदों ने न केवल हिन्दी में हस्ताक्षर करने प्रारम्भ किये। अपितु हिन्दी में कार्यवाही भी मुद्रित होनी प्रारम्भ हो गई। संसद का एक संस्मरण कुछ समय पूर्व आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के पूर्व प्रधान डॉ० शिव कुमार शास्त्री जी ने मुझे सुनाया वह इस प्रकार है— स्वामी जी, महाराज संसद में अपना भाषण प्रारम्भ करने से पूर्व वेद मन्त्र का गान किया करते थे। आज लोकसभा के साहित्य में सैकड़ों वेद मन्त्र मुद्रित हो चुके हैं। १३ अप्रैल १९६१ को जब लोकसभा में अंग्रेजी को अनिश्चित काल तक सहभाषा के रूप में लाने का विधेयक सरकार ने रखा। स्वामी जी ने इसका पूर्ण विरोध किया। मार्शल द्वारा आपको बलपूर्वक संसद के शेष सत्र के लिए निकाल दिया। परन्तु धर्मधुनि स्वामी जी इतना अपमान सहन करने के पश्चात् भी हिन्दी की रक्षा के लिए और दृढ़ प्रतिज्ञा हो गये। भला परिश्रमी व्यक्ति कभी असफल होता है। अन्त में शस्यमेव जयते के आधार पर स्वामी जी की विजय हुई और सरकार को अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी का अनुवाद भी प्रस्तुत करने की स्वीकृति देनी पड़ी। श्री स्वामी जी श्रमिक वर्ण के प्रति भी सहानुभूति रखते थे चाहे वह खेत में हल चलाने वाला मजदूर हो या औद्योगिक क्षेत्र का सामान्य मजदूर। एक बार उनके संसदीय क्षेत्र यमुनानगर में श्री गोपाल पेपर मिल में मजदूरों पर अत्याचार हुए। स्वामी जी ने इस अत्याचार के विरोध में १० जनवरी से ४ फरवरी १९६४ तक पं० जवाहर लाल नेहरू प्रधानमन्त्री की कोठी पर धरना दिया। आप ने २६ अप्रैल १९६५ से १० मई १९६५ तक लोकसभा के प्रांगण में गोवध के

(शेष पृष्ठ 4 पर)

आर्य समाज संदेश विहार के 35वें वार्षिक उत्सव का सफल एवं भव्य आयोजन

रविवार, 4 अक्टूबर 2026 को आर्य समाज संदेश विहार, पीतमपुरा, दिल्ली-110034 का 35वाँ वार्षिक उत्सव पूज्य आचार्य आनंद जी के पावन सान्निध्य में अत्यंत श्रद्धा, उत्साह एवं भव्यता के साथ सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। प्रातः 8 बजे 11 कुंडीय विराट यज्ञ हुआ, जिसमें कैप्टन स्मिथ मछार के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ हेतु विशेष आहुतियाँ समर्पित कर परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की गई। यज्ञ के पश्चात प्रो० डॉ० महावीर जी के कर कमलो द्वारा ध्वजारोहण हुआ एवं प्रसाद/नाश्ते की व्यवस्था रही। सत्संग भवन में आयोजित मुख्य समारोह में युवा भजन गायक गौरव आर्य ने सुंदर भजनों से सभी को मंत्रमुग्ध किया। इसके पश्चात पूज्य आचार्य आनंद जी ने अपने प्रेरणादायी एवं ज्ञानवर्धक उद्बोधन से सभी का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री अजय रवि हंस जी, लोकप्रिय निगम पार्षद, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य के प्रधान श्री जोगिंदर खट्टर जी तथा वेद प्रचार मंडल, उत्तर-पश्चिमी दिल्ली के महामंत्री श्री संजीव गर्ग जी सहित अनेक गणमान्य अतिथियों ने पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई एवं अपने प्रेरणादायी विचार रखे। इस अवसर पर श्री विजेंद्र आनंद जी एवं श्रीमती अनिता जी को आर्य समाज की ओर से 'आर्य श्रेष्ठी' सम्मान प्रदान कर सम्मानित किया गया। अंत में मैं सभी दानदाताओं, कार्यकर्ताओं, श्रमदान करने वाले समस्त साथियों तथा प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग देने वाले प्रत्येक व्यक्ति का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। आप सभी के सहयोग, समर्पण और सेवा भावना के बिना यह आयोजन संभव नहीं था। कामना है कि आर्य समाज के प्रति आप सभी का स्नेह, सहयोग, प्रेम और आशीर्वाद इसी प्रकार बना रहे।



— दुर्गेश आर्य, प्रधान, आर्य समाज संदेश विहार

जींद हरियाणा में शिक्षक सम्मान समारोह सम्पन्न

शिक्षा और शिक्षक समाज के निर्माण की आधारशिला—महेन्द्र भाई

जींद, सोमवार, 5 अक्टूबर 2026 केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में प्रांतीय शिक्षक सम्मान समारोह स्वामी दिव्यानंद के पावन सान्निध्य में संपन्न हुआ। पूरे हरियाणा से शिक्षा क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले 131 नेशनल एवं स्टेट अवार्डी शिक्षक— शिक्षिकाओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ समाजसेवी डॉ. अमीरचंद यादव ने ध्वजारोहण कर किया। मुख्य अतिथि डॉ. रामपाल सैनी (कुलपति, रणवीर सिंह विश्वविद्यालय, जींद) ने कहा कि शिक्षक केवल ज्ञानदाता नहीं, बल्कि राष्ट्र और समाज के भविष्य का निर्माता होता है। समारोह की अध्यक्षता कर रहे केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के महामंत्री महेन्द्र भाई ने कहा कि शिक्षा ज्ञान के साथ विवेक, संस्कार और आत्मनिर्भरता देती है। अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षक दिवस पर उन्होंने गुरुजनों के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए ज्ञान के साथ संस्कार और सफलता के साथ सदाचार का संकल्प लेने का आह्वान किया। जिला अध्यक्ष श्रीकृष्ण दहिया ने सम्मानित शिक्षकों के योगदान की सराहना की और बताया कि राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षकों में अनिल कौशिक, मनोज कुमार लाकड़ा, अंजू दहिया, बसरुद्दीन खान, ममता पालीवाल, डॉ. ईश्वर चंद्र शर्मा, नरेंद्र गर्ग और राजेश कुमार शामिल रहे। मनोज कुमार लाकड़ा ने अपने पिता स्व. सूरत सिंह की स्मृति में नेशनल अवार्डी शिक्षकों को सम्मानित किया। कार्यक्रम में रामकुमार सिंह, वेद प्रकाश सिंह, धर्मपाल आर्य, रोहित कुमार सिंह, योगेंद्र कुमार, योगाचार्य सूर्य देव सहित सैकड़ों शिक्षक एवं सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।



प्रोफेसर अशोक कुमार आर्य का अभिनन्दन

आर्यावर्त केसरी के प्रधान संपादक, जे. एस. हिन्दू (पी.जी.) कॉलेज, अमरोहा के पूर्व प्राध्यापक तथा के. ए. (पीजी) कॉलेज, कासगंज के सेवा निवृत्त प्राचार्य प्रो अशोक कुमार रुस्तगी (आर्य) की ओर से जे.एस. हिन्दू (पी.जी.) कॉलेज के श्री अभिनन्दन सभागार में आभार एवं धन्यवाद ज्ञापन समारोह का भव्य आयोजन हुआ। इस अभिनन्दन समारोह एवं पुस्तक विमोचन कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के प्रधान एवं सुविख्यात संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने की तथा राष्ट्र निर्माण पार्टी एवं मनु संस्कृति संस्थान के संस्थापक एवं अध्यक्ष ठाकुर विक्रम सिंह जी मुख्य अतिथि रहे। कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन, वैदिक वंदना तथा राष्ट्र गीत वंदे मातरम् से हुआ। इस अवसर पर शिक्षाविद पूर्व प्राचार्य, आर्यावर्त जन उत्पन्न न्यास (पंजी.) के अध्यक्ष तथा अनेक राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं के प्रधान सम्पादक डॉ. अशोक कुमार रुस्तगी (आर्य) का भव्य अभिनन्दन, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश, स्वामी आदित्यवेश, ठाकुर विक्रम सिंह, गुरुकुल चोटीपुरा की आचार्या डॉ. सुमेधा, आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री, आचार्य अखिलेश मेधावी सहित अनेक विशिष्ट जनों ने संयुक्त रूप से किया।



केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा 2020 से 807वां वेबिनार सम्पन्न

आध्यात्मिकता की महत्ता विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

आध्यात्मिकता स्वयं को जानने की यात्रा है —विमलेश बंसल

सोमवार, 28 सितम्बर 2026 केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में आध्यात्मिकता की महत्ता विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। कोरोना काल से 805 वाँ वेबिनार था। वैदिक विदुषी विमलेश बंसल आर्या ने कहा कि आध्यात्मिकता जीवन में क्यों अनिवार्य है। आध्यात्मिकता किसी पूजा, वेश या दिखावे का नाम नहीं है। आध्यात्मिकता स्वयं को जानने की यात्रा है। जब व्यक्ति बाहर की दौड़ से थक कर भीतर की ओर मुड़ता है, कि भैं कौन हूँ? मेरा कर्तव्य क्या है? मुझे कहाँ जाना है? — वहीं से आध्यात्मिकता आरम्भ होती है। 1. देह को सजाना श्रृंगार है, और आत्मा को सजाना आध्यात्मिकता है। 2. संसार में रहना संसार नहीं है, संसार को मन में रखना संसार है। कमल की तरह संसार में रहकर भी निर्लिप्त रहना ही आध्यात्मिकता है। 3. जब ज्ञान आचरण में उतर जाए तो वही आध्यात्मिकता बन जाता है। आध्यात्मिक व्यक्ति वह नहीं जो आँख बंद करके बैठा है, आध्यात्मिक वह है जिसकी आँख खुली है — जो हर प्राणी में उसी एक आत्मा को देखता है। मुख्य अतिथि शिक्षाविद् चन्द्र कांता गेरा कानपुर व अध्यक्ष उषा मलिक ने भी अपने विचार व्यक्त किए। परिषद् अध्यक्ष अनिल आर्य ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया व प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका कौशल्या अरोड़ा, जनक अरोड़ा, रवीन्द्र गुप्ता, कृष्णा पाहुजा आदि के मधुर भजन हुए।



रेवाड़ी में शिक्षक सम्मान समारोह सम्पन्न

शिक्षा मंत्री महिपाल ढांडा ने कहा— शिक्षक राष्ट्र निर्माण की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी



रेवाड़ी। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् एवं पतंजलि परिवार रेवाड़ी के संयुक्त तत्वावधान में रविवार को बाल भवन, रेवाड़ी में श्रेष्ठ शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में रेवाड़ी जिले के विभिन्न विद्यालयों में शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 71 शिक्षकों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में 'हरियाणा सरकार के शिक्षा मंत्री महिपाल ढांडा' मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे, जबकि 'रेवाड़ी विधायक लक्ष्मण सिंह यादव' ने समारोह की अध्यक्षता की। 'डॉ. वंदना पोपली' अति विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। समारोह में पतंजलि के प्रदेश प्रभारी 'चंद्रपाल योगी, सह प्रदेश प्रभारी 'विनोद सोनी, मंडल प्रभारी 'सुरेंद्र पाल, जिला शिक्षा अधिकारी 'राजेंद्र शर्मा, जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी 'प्रदीप दहिया' तथा रेवाड़ी जिले के पांचों ब्लॉकों के खंड शिक्षा अधिकारी सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। इसके अलावा गौ रक्षक शहीद सोनू सरपंच के पिता 'शीशराम', 'बाबू जी वीर कुमार यादव, नव ज्ञान शिक्षण संस्थान के चेयरमैन 'राजेंद्र, प्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी 'एम.पी. गोयल', ऋषि राज रोहतक सहित विभिन्न सामाजिक एवं शैक्षणिक क्षेत्र से जुड़े लोगों ने कार्यक्रम में अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री 'महिपाल ढांडा' ने सम्मानित शिक्षकों को बधाई देते हुए कहा कि शिक्षक केवल विद्यार्थियों को किताबी ज्ञान नहीं देते, बल्कि उनके व्यक्तित्व एवं चरित्र का निर्माण भी करते हैं। एक श्रेष्ठ शिक्षक ही श्रेष्ठ समाज और मजबूत राष्ट्र की नींव रखता है। उन्होंने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में समर्पण भाव से कार्य करने वाले शिक्षकों का सम्मान समाज में सकारात्मक संदेश देता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विधायक 'लक्ष्मण सिंह यादव' ने कहा कि शिक्षकों का सम्मान वास्तव में ज्ञान, संस्कार और राष्ट्र निर्माण का सम्मान है।

KAYP द्वारा विशाल धरने का आयोजन



नया बाजार स्थित स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन को किराएदारों और अवैध कब्जा करने वालों से मुक्ति दिलाने के लिए आर्य समाज की युवा संस्था केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् ने 23 दिसम्बर को प्रातः श्रद्धानन्द चौक टाउन हाल चांदनी चौक पर विशाल धरने का आयोजन किया है। अध्यक्ष अनिल आर्य ने बताया कि नया बाजार में अवैध कब्जों की भरमार है। अवैध कब्जों का यह हाल है कि आप श्रद्धालु मुख्य गेट से निकल भी नहीं पाता है।

(पृष्ठ 2 का शेष)

विरोध में अनशन किया। आप ७ नवम्बर १९६५ को संसद भवन पर गोभक्त प्रदर्शन कारियों को सम्बोधित करते हुए गिरफ्तार कर लिए गए और आप को तिहाड़ जेल में नजरबन्द कर दिया गया। १९६५ में आम चुनाव में आप मात्र १९ मतों से पराजित हो गए।

देश एवं आर्य समाज की विषम परिस्थितियों ने इस बूढ़े सिंह को घायल कर दिया। वृद्धावस्था के चिन्ह स्पष्टतया दिखाई देने लगे शरीर भी जर्जर हो गया। इसी बीच एक और वज्रपात हुआ कि उनका प्रिय शिष्य आचार्य पं० धर्मवीर शास्त्री जो उनसे ४० वर्ष छोटे थे, जिसको उन्होंने पुत्रवत् पाला, पढ़ाया, अपना उत्तराधिकारी बनाया, वह दिवंगत हो गया। श्री स्वामी जी का शारीरिक क्षीणता के साथ-साथ उनकी मानसिक स्थिति भी खराब होने लगी। उनका स्वास्थ्य प्रतिदिन गिरता चला गया। डॉ० शिवकुमार शास्त्री जी ने बताया कि मैं ८ मई १९६० रात्रि के सात बजे आर्य समाज गुड़गांव में व्याख्यान देने के लिए जा रहा था कि गुरुकुल घरौण्डा के आचार्य नैष्ठिक ब्रह्मचारी, तेजस्वी व्यक्तित्व के धनी डॉ० देवव्रत जी का फोन आया कि श्रद्धेय स्वामी जी महाराज का नश्वर शरीर नहीं रह। ९ मई १९६० को उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

देश के विभिन्न प्रान्तों में स्वामी जी के प्रति श्रद्धांजलि प्रकट करने के लिए शोक सभाएं हुईं। संसद में उनकी स्मृति में मौन रखा गया।

श्रद्धेय स्वामी जी महाराज ने आर्य जाति की रक्षा, स्वतन्त्रता एवं अधिकारियों की रक्षा के लिए जीवन भर संघर्ष किया। गुरुकुल प्रणाली को प्रचारित कर अपने गुरु के प्रेरणा स्रोत अपने मार्ग दर्शक ऋषि दयानन्द जी को सच्ची श्रद्धांजलि दी। अपने शिष्यों को विद्वान् बनाया श्रुत्युक्त शरदरु शताब्द वेद की इस सूक्ति को जीवन में चरितार्थ किया। स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती जी की स्वयं रचित इस गीतिका की कुछ पंक्तियों से अपनी इस लेखनी को विराम दे रहा हूँ। हे ब्रह्मन् संसार में क्या यह समय होगा कभी। ब्रह्मवर्चस्वी निज देश वासी विप्र गण होंगे कभी। वृष्टि समय पर हो सदा सब औषधि फूले फले। सब वस्तु से सम्पन्न हो सब वेद मार्ग पर चलें।

स्रोत— आत्म—शुद्धि—पथ मासिक का मई २०१६ का अंक; प्रस्तुति— प्रियांशु सेठ,